डायरी का एक पन्ना

पूर्व वर्षों के प्रश्नोत्तर
2015
निबंधात्मक प्रश्न

Question 1.

'डायरी का पन्ना' पाठ के आधार पर बताइए कि पुलिस ने कैसा दमनचक्र चलाया और क्यों? लोगों ने किस प्रकार उसका मुँहतोड़ उत्तर दिया?

Answer:

'डायरी का एक पन्ना' पाठ में लेखक सीताराम सेकसरिया ने 26 जनवरी 1931 का वर्णन किया है। 26 जनवरी 1931 को गुलाम भारतवर्ष में दूसरा स्वतंत्रता दिवस मनाया गया था। कलकत्तावासियों ने आज़ादी के इस जश्न में बढ़-चढ़कर भाग लिया। बड़े बाज़ार के प्रायः सभी मकानों पर झंडे फहर रहे थे। पूरे कलकत्ता की रौनक देखते ही बनती थी। जिस रास्ते पर मनुष्य जाते थे उसी रास्ते में उत्साह एवं नवीनता मालूम होती थी। दूसरी तरफ़ अंग्रेज सरकार भी इस आंदोलन को विफल करने में पूरी ताकत से जुटी हुई थी। इस आंदोलन की सफलता सरकार की विफलता थी अतः पुलिस की तरफ़ से भी कड़े सुरक्षा प्रबंध किए गए थे। बड़े-बड़े पार्कों तथा मैदानों को पुलिस ने सवेरे से ही घेर लिया था। आंदोलन ज्यों-ज्यों उग्र होता जा रहा था त्यों-त्यों पुलिस का दमन चक्र भयंकर रूप लेता जा रहा था। पुलिस ने जुलूस पर लाठी चार्ज किया। इस लाठी चार्ज में अनेक लोग घायल हुए। क्षितीश चटर्जी का सिर फट गया। वृजलाल गोयनका को एक अंग्रेज़ घुड़सवार ने लाठी से मारा और पकड़ कर दूर तक घसीटा। स्त्री कार्यकर्त्ताओं पर भी जमकर लाठी चार्ज किया गया। अंग्रेजों के इस अत्याचार के चलते 160 से भी अधिक आदमी बुरी तरह से घायल हो गए थे। लगभग 105 स्त्रियों को लाल बाज़ार लॉकअप में ले जाया गया। पर कलकत्तावासियों ने अंग्रेज़ों के इस अत्याचार का मुँह तोड़ जवाब दिया। पुलिस द्वारा निर्ममता से लाठी चार्ज करने पर भी विभिन्न पार्कों एवं मोनुमेंट पर भारी तादाद में पहुँचकर; झंडा फहराकर तथा शपथ-पत्र पढ़कर कलकत्तावासियों ने यह सिद्ध कर दिया कि अब वे सरकार द्वारा बनाए गए कानूनों से नहीं डरते।

Question 2.

'डायरी का पन्ना' पाठ आपको देश की आज़ादी के इतिहास को पढ़ने के लिए किस प्रकार प्रेरित करता है?

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Answer:

'डायरी का पन्ना' पाठ में लेखक सीताराम सेकसरिया ने 26 जनवरी 1931 के उस दिन का वर्णन किया है जब अन्य देशवासियों सहित कलकत्ता के लोगों ने भी नेताजी सुभाषचन्द्र बोस के नेतृत्व में पूरे जोश-खरोश के साथ दूसरा स्वतंत्रता दिवस मनाया था। देश-प्रेम की भावना से ओत-प्रोत यह पाठ याद दिलाता है उन क्रांतिकारियों की जिन्होंने देश को पराधीनता की बेड़ियों से मुक्त कराने के लिए अनेक कुर्बानियाँ दी थीं।

2014
अतिलघुत्तरात्मक प्रश्न

Question 3.

मोनुमेंट पर लोग ज़्यादा घायल क्यों हुए?

Answer:

मोनुमेंट पर लोग ज़्यादा घायल हुए क्योंकि मोनुमेंट पर ही शाम को सभा होनी थी तथा प्रतिज्ञा-पत्र पढ़ा जाना था। वहाँ बड़ी तादाद में लोगों ने पहुँचकर अंग्रेज़ सरकार को खुली चुनौती दी थी। अंग्रेज़ अफ़सरों की ओर से भी इस प्रयास को असफल करने के लिए लाठी चार्ज किया गया था जिसके चलते अनेक लोग घायल हुए थे।

लघुत्तरात्मक प्रश्न

Question 4.

मोनुमेंट की जगह पुलिस ने सुबह से ही घेरा क्यों डाल लिया था?

Answer:

मोनुमेंट की जगह पर पुलिस ने सुबह से ही घेरा डाल लिया था क्योंकि मोनुमेंट पर ही शाम चार बजकर चौबीस मिनट पर झंडा फहराया जाना था। तथा स्वतंत्रता का घोषणा-पत्र पढ़ा जाना था। वहाँ बड़ी तादाद में लोगों और स्वयं सेवकों के आने की संभावना थी। स्वतंत्रता के इस आयोजन को अंग्रेज़ अफ़सर असफल करना चाहते थे।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

गद्यांश पर आधारित प्रश्न

Question 5.

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

यह सब तो अपने सुनी हुई लिख रहे हैं पर सुभाष बाबू का और अपना विशेष फ़ासला नहीं था। सुभाष बाबू बड़े ज़ोर से वंदे मातरम् बोलते थे, यह अपनी आँख से देखा। पुलिस भयानक रूप से लाँठियाँ चला रही थी। क्षितीश चटर्जी का फटा हुआ सिर देखकर तथा उसका बहता हुआ खून देखकर आँख मिंच जाती थी। इधर यह हालत हो रही थी कि उधर स्त्रियाँ मोनुमेंट की सीढ़ियों पर चढ़ झंडा फहरा रही थीं और घोषणा पढ़ रही थीं। स्त्रियाँ बहुत बड़ी संख्या में पहुँच गई थीं। प्रायः सबके पास झंडा था, जो वालेंटियर गए थे वे अपने स्थान से लाठियाँ पड़ने पर भी हटते नहीं थे।

(क) लेखक ने अपनी आँखों से क्या देखा?

(ख) क्षितीश चटर्जी की स्थिति इतनी भयानक क्यों हुई?

(ग) वालेंटियरों की क्या विशेषता थी?

Answer:

(क) लेखक ने अपनी आँखों से देखा कि सुभाष बाबू बहुत ज़ोर से 'वंदे मातरम्' बोलते थे।

(ख) जुलूस को मोनुमेंट की ओर जाने से रोकने के लिए पुलिस भयानक रूप से लाठी चार्ज कर रही थी। इस लाठी चार्ज में क्षितीश चटर्जी का सिर बुरी तरह से फट गया था।

(ग) वालेंटियरों की विशेषता थी कि वे लाठियाँ पड़ने पर भी हटते न थे।

2013
निबंधात्मक प्रश्न

Question 6.

26 जनवरी 1931 के दिन मोनुमेंट के नीचे झंडा फहराते हुए संघर्ष का आँखों देखा हाल लिखिए।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Answer:

कौंसिल की तरफ़ से यह निर्णय लिया गया था कि ठीक चार बजकर दस मिनट पर मोनुमेंट के नीचे ध्वज फहराया जाएगा। सुभाष बाबू जुलूस लेकर जब आए, तो उन्हें चौरंगी पर ही रोका गया, परंतु भीड़ इतनी अधिक थी कि पुलिस उन्हें रोक नहीं सकी। मैदान के मोड़ पर पहुँचते ही पुलिस ने लाठियाँ चलानी शुरू कर दीं। बहुत आदमी घायल हुए। सुभाष बाबू पर भी लाठियाँ पड़ीं। सुभाष बाबू बहुत ज़ोरों से वंदे मातरम् बोल रहे थे। पुलिस भयानक रूप से लाठियाँ चला रही थी। क्षितीश चटर्जी के सिर पर लाठी लगी और उनका सिर फट गया। बहुत खून बहा, उधर स्त्रियाँ मोनुमेंट की सीढ़ियों पर चढ़कर तिरंगा फहरा रहीं थीं और घोषणा पढ़ रही थीं। प्रायः सबके पास झंडा था। बालेंटियर लाठी पड़ने पर भी अपने स्थान से पीछे नहीं हट रहे थे। सुभाष बाबू को पकड़ लिया गया और गाड़ी में बैठाकर उन्हें लाल बाज़ार लॉकअप में भेज दिया गया। कुछ देर बाद ही बहुत बड़ी संख्या में स्त्रियाँ वहाँ इकट्ठी हो गईं, परंतु पुलिस ने लाठियाँ चलानी शुरू कर दी। इस बार बहुत आदमी घायल हुए। धर्मतल्ले के मोड़ पर आकर जुलूस तितर-बितर हो गया। 50-60 स्त्रियाँ वहीं बैठ गईं। जिन्हें पुलिस ने लाल बाज़ार लॉकअप में डाल दिया। स्त्रियों का एक भाग आगे बढ़ गया, जिन्हें बहू बाज़ार के मोड़ पर रोका दिया गया। वृजलाल गोयनका ध्वज लेकर मोनुमेंट की ओर इतनी तेज़ दौड़ा कि स्वयं गिर पड़ा। पुलिस ने उसे पकड़ लिया और कुछ देर बाद छोड़ दिया। सब मिलाकर 105 स्त्रियाँ पकड़ी गईं थीं।

गद्यांश पर आधारित प्रश्न

Question 7.

निम्नलिखित गद्यांश के आधार पर दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

बड़े बाज़ार के प्रायः मकानों पर राष्ट्रीय झंडा फहरा रहा था और कई मकान तो ऐसे सजाए गए थे कि ऐसा मालूम होता था कि मानो स्वतंत्रता मिल गई हो। कलकत्ते के प्रत्येक भाग में ही झंडे लगाए गए थे। जिस रास्ते से मनुष्य जाते थे उसी रास्ते में उत्साह और नवीनता मालूम होती थी। लोगों का कहना था कि ऐसी सजावट पहले नहीं हुई। पुलिस भी अपनी पूरी ताकत से शहर में गश्त देकर प्रदर्शन कर रही थी। मोटर लारियों में गोरखे तथा सारजेंट प्रत्येक मोड़ पर तैनात थे। कितनी ही लारियाँ शहर में घुमाई जा रही थीं। घुड़सवारों का प्रबंध था, कहीं भी ट्रैफ़िक पुलिस नहीं थी। सारी पुलिस को इसी काम में लगाया गया था। बड़े-बड़े पार्कों तथा मैदानों को पुलिस ने सवेरे से ही घेर लिया था।

(क) बड़े बाज़ार के मकानों की सुंदरता क्यों देखते बन रही थी?

(ख) इस तरह के माहौल को देखकर लोगों की क्या प्रतिक्रया हो रही थी?

(ग) उस समय सरकार द्वारा पुलिस की व्यवस्था क्यों की गई थी?

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Answer:

(क) बड़े बाज़ार के प्रायः मकानों पर राष्ट्रीय झंडा फहर रहा था। कई मकान तो ऐसे सजाए गए थे मानों स्वतंत्रता मिल गई हो। लोगों का कहना था कि ऐसी सजावट पहले नहीं हुई इसीलिए बड़े बाज़ार के मकानों की सुंदरता देखते ही बन रही थी।

(ख) लोगों में असीम उत्साह व नवीनता थी। पूरे कलकत्ते को सजाया गया था। कलकत्ते के प्रत्येक भाग में झंडे लगाए गए थे। लोगों में 'जोश' व 'खुशी' देखकर सारे शहर में पुलिस गश्त लगा रही थी। पुलिस को डर था कि कहीं यह चिंगारी एक क्रांति का रूप न ले ले।

(ग) उस समय सरकार द्वारा पुलिस की व्यवस्था इसलिए की गई थी क्योंकि सभी लोगों में असीम उत्साह की भावना थी। सरकार को यह डर था कि कहीं ये लोग बेकाबू न हो जाएँ इसलिए सारे शहर को पुलिस छावनी बना दी गई थी। पुलिस अपनी पूरी ताकत से प्रदर्शन को रोकने का प्रयास कर रही थी।

2012
लघुत्तरात्मक प्रश्न

Question 8.

'लेखक की डायरी का एक पन्ना' भावी पीढ़ी को किस प्रकार प्रेरित करता है? स्पष्ट कीजिए।

Answer:

'डायरी का एक पन्ना' पाठ से पाठकों को देशभक्ति, देश-प्रेम, त्याग, बलिदान, धैर्य, साहस, सहयोग आदि भावनाओं की प्रेरणा मिलती है। आज़ादी का उत्सव मनाने के लिए लोग पुलिस की लाठियाँ खाते हैं, जेल चले जाते हैं, बुरी तरह घालय हो जाते हैं, पूरे कलकत्ता को सजाते हैं, जहाँ हर भवन पर तिरंगा लहराता हुआ दिखाई पड़ता है। कलकत्ता के माथे पर जो कलंक लगा था उस कलंक को मिटाने के लिए उन्होंने जिस धैर्य, साहस व सहयोग से देशभक्ति का परिचय दिया वह निश्चय ही पाठकों को प्रेरित करता है।

Question 9.

स्वतंत्रता आंदोलन अब एक ओपन लड़ाई में तब्दील हो चुका था। यहाँ ओपन लड़ाई से क्या तात्पर्य है?

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Answer:
यहाँ पुलिस और कौंसिल के बीच की लड़ाई को ओपन लड़ाई का नाम दिया गया। पुलिस कमिश्नर ने नोटिस निकाल दिया था कि अमुक-अमुक धारा के अनुसार कोई सभा नहीं होगी। कार्यकर्ताओं को नोटिस दे दिया गया कि सभा में भाग लेने वालों को दोषी समझा जाएगा। इधर कौंसिल ने यह कहा था कि ठीक चार बजकर चौबीस मिनट पर मोनुमेंट के नीचे तिरंगा फहराया जाएगा तथा स्वतंत्रता की प्रतीज्ञा पढ़ी जाएगी। वहाँ सर्वसाधारण की उपस्थिति अनिवार्य है। इसे ही कौंसिल की ओर से ओपन लड़ाई कहा गया था।

2011
लघुत्तरात्मक प्रश्न

Question 10.

कलकत्तावासियों के लिए 26 जनवरी 1931 का दिन क्यों महत्वपूर्ण था?

Answer:
26 जनवरी 1930 को पूरे देश में स्वतंत्रता दिवस के रूप में मनाया गया था। 26 जनवरी 1931 का दिन उसी की पुनरावृत्ति थी। कलकत्तावासियों ने इसे इस प्रकार मनाया मानों उन्हें स्वतंत्रता मिल गई हो। चूँकि कलाकत्तावासियों के बारे में यह कहा गया था कि गत वर्ष के स्वतंत्रता समारोह में उनका हिस्सा बहुत साधारण था इसलिए कलाकत्तावासियों ने खूब धूमधाम से स्वतंत्रता दिवस मनाया।

Question 11.

26 जनवरी 1931 के दिन को अमर बनाने के लिए क्या-क्या तैयारियाँ की गईं?

Answer:
26 जनवरी 1931 को अमर बनाने के लिए केवल प्रचार में 2000 रुपया खर्च किए गए थे। कार्यकर्ताओं ने लोगों को घर-घर जाकर इसके महत्त्व के बारे में समझाया था। प्रायः सभी मकानों पर राष्ट्रीय झंडा फहराया गया था। कई मकान तो ऐसे सजाए गए थे मानों स्वतंत्रता मिल गई हो। कलकत्ते के प्रत्येक भाग में झंडे लगाए गए थे। सभी रास्तों में लोगों में उत्साह और नवीनता दिखाई पड़ती थी। लोगों का कहना था कि ऐसी सजावट पहले नहीं हुई।

Question 12.

आज जो बात थी वह निराली थी– किस बात से पता चल रहा था कि आज का दिन अपने आप में निराला है? स्पष्ट कीजिए।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Answer:

कलकत्तावासियों का उत्साह उस दिन देखते ही बनता था। पुरुषों के साथ-साथ स्त्रियाँ भी जोश-खरोश के साथ हिस्सा ले रहीं थीं। पुलिस के दमन के बाद भी लोग निडर होकर जूलूस में हिस्सा लेने पहुँचे थे। तीन बजे से ही मैदान में हज़ारों आदमियों की भीड़ एकत्रित होने लगी। लोग टोलियाँ बना-बना कर मैदान में घूमने लगे। आज तक इतनी बड़ी सभा इस मैदान में नहीं की गई थी, इसी कारण आज के दिन को निराला कहा गया है।

निबंधात्मक प्रश्न

Question 13.

बहुत से लोग घायल हुए, बहुतों को लॉकअप में डाला गया, स्त्रियाँ जेल गईं, फिर भी इस दिन को अपूर्व बताया गया। आपके विचार से यह अपूर्व क्यों है? 'डायरी का एक पन्ना पाठ' के आधार पर लिखिए।

Answer:

हमारे विचार से यह दिन सचमुच अपूर्व था। वस्तुतः 26 जनवरी 1930 को जब सारा देश स्वतंत्रता दिवस मना रहा था, तब उसमें कलकत्तावासियों का सहयोग बहुत साधारण था। कलकत्तावासी अपने इसी कलंक को मिटाने के लिए 26 जनवरी 1931 के दिन को धूमधाम से मना रहे थे। सभी लोग इसे अपना कर्तव्य मानकर उत्साह प्रकट कर रहे थे। इस वर्ष वे जितना दे सकते थे उन्होंने दिया। पूरे कलकत्ता को अभूतपूर्व ढंग से सजाया था। इस स्वतंत्रता समारोह में स्त्री, पुरुष, लड़के, लड़कियाँ सभी उत्साहपूर्वक भाग ले रहे थे। कलकत्तावासियों ने यह निर्णय लिया कि शाम 4:24 मिनट पर वे मोनुमेंट के नीचे झंडा फहराएँगे और आज़ादी की प्रतिज्ञा पढ़ेंगे। इसे रोकने के लिए पुलिस भयानक रूप से लाठियाँ चला रही थी। वालेंटियर लाठियाँ पड़ने पर भी अपनी जगह से नहीं हट रहे थे। स्त्रियाँ मोनुमेंट की सीढ़ियों पर चढ़ झंडा फहरा रहीं थीं। 105 स्त्रियाँ पकड़ी गई थीं, 160 आदमी घायल हुए थे जिन्हें अस्पताल पहुँचाया गया। इतनी बड़ी संख्या में घायलों और स्त्रियों को देखकर इस दिन को अपूर्व कहा गया। कहा जाता है कि कलकत्ता के नाम पर जो कलंक था वह बहुत अंशों में उस दिन धुल गया।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

गद्यांश पर आधारित प्रश्न

Question 14.

निम्नलिखित गद्यांश के आधार पर दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

ठीक चार बजकर दस मिनट पर सुभाष बाबू जुलूस लेकर आए। उनको चौरंगी पर ही रोका गया, पर भीड़ की अधिकता के कारण पुलिस जुलूस को रोक नहीं सकी। मैदान के मोड़ पर पहुँचते ही पुलिस ने लाठियाँ चलानी शुरू कर दीं, बहुत आदमी घायल हुए, सुभाष बाबू पर भी लाठियाँ पड़ीं। सुभाष बाबू बहुत ज़ोरों से 'बंदे मातरम्' बोल रहे थे। ज्योतिर्मय गांगुली ने सुभाष बाबू से कहा, आप इधर आ जाइए। पर सुभाष बाबू ने कहा, आगे बढ़ना है।

(क) किसने सुभाष बाबू को अलग आने के लिए कहा?

(ख) पुलिस जुलूस को क्यों नहीं रोक सकी?

(ग) मैदान के मोड़ पर पहुँचते ही क्या-क्या हुआ?

Answer:

(क) ज्योतिर्मय गांगुली ने सुभाष बाबू को अलग आने के लिए कहा।

(ख) भीड़ की अधिकता के कारण पुलिस जुलूस को नहीं रोक सकी।

(ग) मैदान के मोड़ पर पहुँचते ही पुलिस ने लाठियाँ चलानी शुरू कर दीं, जिससे बहुत आदमी घायल हुए तथा सुभाष बाबू पर भी लाठियाँ पड़ीं।

Question 15.

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

मोनुमेंट के नीचे जहाँ शाम को सभा होने वाली थी उस जगह को तो भोर में छह बजे से ही पुलिस ने बड़ी संख्या में घेर लिया था पर तब भी कई जगह तो भोर में ही झंडा फहराया गया। श्रद्धानंद पार्क में बंगाल प्रांतीय विद्यार्थी संघ के मंत्री अविनाश बाबू ने झंडा गाड़ा, तो पुलिस ने उनको पकड़ लिया तथा और लोगों को मारा या हटा दिया। तारा सुंदरी पार्क में बड़ा-बाज़ार कांग्रेस कमेटी के युद्ध-मंत्री हरिश्चंद सिंह झंडा फहराने गए पर वे भीतर न जा सके। वहाँ पर काफ़ी मारपीट हुई और दो-चार आदमियों के सिर फट गए। गुजराती सेविका संघ की ओर से जुलूस निकला जिसमें बहुत-सी लड़कियाँ थीं उनको गिरफ़्तार कर लिया।

(क) मोनुमेंट को पुलिस ने भोर में ही क्यों घेर लिया?

(ख) अविनाश बाबू कौन थे और उनके झंडा गाड़ने पर क्या प्रतिक्रिया हुई?

(ग) हरिशचंद्र सिंह झंडा फहराने भीतर क्यों नहीं जा सके?

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Answer:

(क) सरकार नहीं चाहती थी कि मोनुमेंट के नीचे सभा हो। यही कारण था कि मोनुमेंट को पुलिस ने भोर में ही घेर लिया, ताकि वहाँ लोग न इकट्ठा हों।

(ख) अविनाश बाबू बंगाल प्रांतीय विद्यार्थी संघ में मंत्री थे। उनके झंडा गाड़ने पर पुलिस ने उनको पकड़ लिया तथा और लोगों को मारा और हटा दिया।

(ग) तारा सुंदरी पार्क में बड़ा बाज़ार कांग्रेस कमेटी के युद्ध मंत्री हरिश्चन्द्र सिंह झंडा फहराने भीतर नहीं जा सके क्योंकि वहाँ पर काफी मारपीट हुई और दो-चार आदमियों के सिर फट गए थे।

2010
लघुत्तरात्मक प्रश्न

Question 16.

कलकत्ता में द्वितीय स्वतंत्रता दिवस किस प्रकार मनाया गया? 'डायरी का एक पन्ना' पाठ के आधार पर लिखिए।

Answer:

26 जनवरी 1931 को कलकत्ता में द्वितीय स्वतंत्रता दिवस पूरे जोश के साथ मनाया गया। इस अवसर पर कलकत्ता के बड़े बाज़ार के सभी मकानों को बहुत अच्छे तरीके से सजाया गया। उन पर राष्ट्रीय ध्वज फहराया गया। कार्यकर्ताओं द्वारा जमकर प्रचार किया गया। केवल प्रचार में दो हज़ार रुपये लग गए। कलकत्ता के प्रत्येक भाग में झंडे लगाए गए। कलकत्ता के अनेक स्थानों से जुलूस निकाले गए। मोनुमेंट के नीचे झंडा फहराने तथा स्वतंत्रता की प्रतिज्ञा पढ़े जाने का कार्यक्रम रखा गया। इस प्रकार चारों ओर स्वतंत्रता की प्राप्ति की लहर दौड़ती-सी जान पड़ रही थी।

Question 17.

सुभाष बाबू के जुलूस को ओपन लड़ाई क्यों कहा गया? 'डायरी का एक पन्ना' पाठ के आधार पर लिखिए।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Answer:

सुभाष बाबू के जुलूस को ओपन लड़ाई कहा गया है क्योंकि जब से देश में कानून भंग की बात शुरू हुई, तब से इतनी बड़ी सभा ऐसे किसी मैदान में नहीं की गई थी। 26 जनवरी 1931, की यह सभा तो वास्तव में ही एक 'खुला चैलेंज' था। एक तरफ़ पुलिस कमीश्नर का नोटिस निकल चुका था कि अमुक-अमुक धारा के तहत सभा नहीं हो सकती। दूसरी तरफ़ अंग्रेज़ सरकार के नोटिस की परवाह किए बगैर कौंसिल की तरफ़ से नोटिस निकाल दिया गया, जिसमें उन्होंने सर्वसाधारण की अधिकाधिक उपस्थिति पर बल दिया। मोनुमेंट पर ध्वजारोहण करने तथा स्वतंत्रता की प्रतिज्ञा पढ़ने हेतु लोगों का आह्वान किया गया। खुले तौर पर अंग्रेज़ों को दी गई इस चुनौती को 'ओपन लड़ाई' कहना सर्वथा उचित है।

2009
लघुत्तरात्मक प्रश्न

Question 18.

जुलूस के लाल बाज़ार आने पर लोगों की क्या दशा हुई? 'डायरी का एक पन्ना' पाठ के आधार पर लिखिए।

Answer:

वृजलाल गोयनका को दो सौ आदमियों का जुलूस बनाकर लालबाज़ार पहुँचते ही उन्हें गिरफ़्तार कर लिया गया। मदालसा भी पकड़ी गई थी। थाने में भी उसको मारा था। सब मिलाकर 105 स्त्रियाँ पकड़ी गईं थीं। बाद में रात को नौ बजे सबको छोड़ दिया गया। लालबाज़ार आने पर लोगों की यह दशा हुई कि उनमें से 160 आदमी घायल अवस्था में अस्पताल पहुँचे। करीब कुल 200 आदमी घायल हुए थे। पकड़े गए लोगों की संख्या का पता नहीं। लालबाज़ार के लॉकअप में 105 स्त्रियाँ थीं। इस प्रकार जुलूस के लालबाज़ार आने पर लोगों की बुरी दशा हुई।

Question 19.

सुभाष चंद्र बोस के जुलूस में स्त्रियों की क्या भूमिका थी? 'डायरी का एक पन्ना' पाठ के आधार पर लिखिए।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Answer:

सुभाष चंद्र बोस के जुलूस में स्त्रियों की भूमिका सराहनीय थी। जगह-जगह से स्त्रियाँ इकट्ठी होकर बहुत बड़े जुलूस में चलने लगीं और वंदे-मातरम् कहती हुई आगे बढ़ीं। आगे जाकर मोनुमेंट पर झंडा फहराया और स्वतंत्रता की प्रतिज्ञा पढ़ी गई जैसा कि कौंसिल का नोटिस था। विमल प्रतिभा, मदालसा आदि के साथ सब मिलाकर 105 स्त्रियाँ पकड़ी गईं थीं। बाद में रात के नौ बजे उन्हें छोड़ दिया गया। इसके बाद भी लालबाज़ार के लॉकअप में 105 स्त्रियाँ थीं।

Question 20.

सुभाष बाबू ने कब और क्यों जुलूस निकाला? लेखक ने इस दिन को अपूर्व क्यों कहा?

Answer:

सुभाष बाबू ने 26 जनवरी, 1931 को जुलूस निकाला था क्योंकि जब स्वतंत्रता आंदोलन के संचालकों ने इनसे कहा कि कलकत्ता (बंगाल) में पूर्ण स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए कुछ काम नहीं किया जा रहा है। तब इस कलंक को धोने के उद्देश्य से सुभाष बाबू ने यह जुलूस निकाला था।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in